प्रातः क्लास 5-5-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है।?

ओमशान्ति। मीठे2 रूहानी बच्चे किसके पास आते हो रूहानी बाप के पास। समझते हो हम शिव बाबा के पास जाते हैं। यह भी जानते हो शिव बाबा सभी आत्माओं का बाप है। यह भी बच्चों को निश्चय होना चाहिए वह सुप्रीम टीचर भी है, सुप्रीम गुरु भी है। सुप्रीम को परम कहा जाता है। उस एक को ही याद करना है। नज़र से नज़र मिलाते हैं ना। गायन है ना नज़र से निहाल स्वामी। कौंदा सदगुरु। उनका भी अर्थ चाहिए ना। नज़र से निहाल किसको? जरूर सारी दुनिया के लिए कहेंगे। क्यों कि सर्व का सदगतिदाता है। सर्व को इस पतित दुनिया से ले जाने वाला है। अभी नज़र किसकी? क्या यह आँखें? नहीं। तीसरी आँख मिलती है ज्ञान से। जिस से आत्मा जानती है यह हम सभी आत्माओं का बाप है। बाप आत्माओं को राय देते हैं। बच्चों मुझे याद करो। शरीर को नहीं, आत्माओं को समझाते हैं। आत्माएं ही पतित तमोप्रधान बनी है। बाप कहते हैं अभी यह तुम्हारा 84 वां जन्म पूरा होता है। वायहनाटक पूरा होता है। पूरा होना भी चाहिए जरूर। हर कल्प पुरानीसो नई बनती है। नई सो पुरानी होती है। नाम भी अलग2 है। नईदुनिया का नाम है सतयुग। बाप ने समझाया है पहले तुमसतयुग में थे फिरपुनर्जन्म लेते2 84 जन्म बिताये। अभी तुम्हारी आत्मा तामेप्रधान, बन गई है। बाप कोयाद करो तो निहाल हो जावेंगे। बाप सम्मुख कहते हैं मेरे को याद करो। कौन कहते हैं? परमपिता परमात्मा बाप कहते हैं बच्चे आत्म-अभिमानी बनो। देह-अभिमानी न बनो। आत्म-अभिमानी बन मेरे में तुम नज़र लगाओ। मैं तेरे में नज़र लगाऊं। तुम भी नज़र लगाओ तो निहाल हो जावेंगे। बाप कोयाद करते रहो। इसमें कोई तकलीफ तो है नहीं। आत्मा ही पढ़ती है पार्ट बजाती है। फिर वही पार्ट रिपीट करना है। 84 जन्मों का पार्ट बजाते2 सीढ़ी उतरते2 हमारी आत्मा पतित बन गई है। अभी कुछ भी दम न रहा है। अभीतुम निहाल नहीं कंगाल हो। फिर निहाल कैसे बनें। यहअक्षर भक्ति मार्गके हैं जिस पर बाप बैठसमझाते हैं। वेदों-शास्त्रों, चित्रों आद पर भीसमझाते हैं। नये चित्र भी बनवाते हैं। जो ज्ञान उनमें है उस पर चित्र बनाते हैं। कहते सो तो बच्चे समझ गये। तुम ने यह चित्र बनाई है ना श्रीमत पर। आसुरी मत पर अनेक ढेर केढेर चित्र बने हैं। है सभी मिट्टी पत्थर आद के। जो चित्र आसुरी मत पर बनाये हैं उनका आक्युपेशन कुछ भी नहीं जानते। बाप आकर सभी बच्चों को समझाते हैं यहपढ़ाईहै भगवानुवाच है तो उनकी कालेज हो गई ना। स्टुडन्ट जानते हैंयहफलाना टीचर। यहांतुम बच्चे भी जानते हो यह बेहद का बा पढ़ाते हैं जो एक ही बार आकर ऐसी वन्डर फुल पढ़ाई पढ़ाते हैं। इस पढ़ाई और उसपढ़ाई में रात दिन का फर्क है। वह पढ़ाई पढ़ते2 राम में पड़ जाते हैं। इस पढ़ाईसे दिन में चले जाते हैं। आसुरी पढ़ाई से दुर्गति होती है। ईश्वरीय पढ़ाई से सदगति होती है। यहतुमको अभी पता पड़ता है। वहपढ़ाईयों तो जन्म जन्मान्तर पढ़ते आये हैं। इसमें तो बाप साफ बताते हैं आत्मा जब पवित्र होगी तब ही धारणा होगी। कहते हैं ना शेर का दूध लिए सोने का कर्तन चाहिए। तुम बच्चे समझते हो हम अभी सोने का बर्तन बन रहे हैं। होंगे तो मनुष्य ही। परन्तु आत्मा को सम्पूर्ण पवित्र बनाना है। 24 कैरट सोना बनना है। सोना पहले 24 कैरट था। अभी 9 कैरट हो गया है। आत्मा की ज्योति जगी हुई थी वह बुझ गई। एकदम सारी बुझ नहीं जाती कुछ थोड़ारहता है। कोई मरता है तो दीवा जलाते हैं ना। बुझ न जाये इसलिए घृत डालते रहते हैं। जिस पर ज्योत जगी रहती है। वह है अल्प काल की बात। यह है बेहद की बात। तुम आत्माओं की अभी ज्योत जगी है। ज्योत जागी हुई और बुझी हुई वालों में फर्क है ना। ज्योत कैसे जगे कैसे पद पाया यह बाप बैठ कर बतलाते हैं। बच्चों को कहते हैं तुम सिर्फ मुझे शद करो। जो मुझे अच्छी तरहयाद करेंगे मैं भी उनको याद करूंगा। यहभी बच्चे अच्छा जानते हैं बराबर नज़र से निहाल करने वाला बाप स्वामी है। इनकी आत्मा भी निहाल होती है। जैसे तुम्हारी ज्योत बुझ गई थी वैसे इनकी भी बुझ गई थी। तुम सभीपरवाने हो। उनको शमा भी कहते हैं। कोई तो परवाने फ्री पहनने आते हैं कोई अच्छी रीत पहचान लेते हैं तो जीत जी

मर जाते हैं। कोईसिर्फ फेरी पहन चले जाते हैं। फिर कब आते हैं। फिर चले जाते हैं। इस संगम युग का सारा गायन है। इस समय जो कुछ चलता है उनके फिर बाद में शास्त्र बनाते हैं। बाप तो एक ही बार आकर तुमको वर्सा देकर जाते हैं। बेहद का बाप सिर्फ बेहद का वर्सा देंगे ना। यह तो गायन भी है। 2। पीछे सतयुग में वर्सा कौन देते हैं। भगवान रचयिता ही वर्सा देते हैं रचना को। याद भी उनको करते हैं। वही बाप भी है टीचर भी है। स्वामी सदगुरु भी उनको ही कहते हैं। भल तुमको किसको स्वामी कहते हो, सदगुरु भी कोई को कहते होंगे। परन्तु सत्य तो एक ही बाप है। सत्य माना ट्रुथ। ट्रुथ हमेशा गाड को कहा जाता है। मनुष्य को नहीं। वह सत्य क्या आकर करते हैं। वही पुरानी दुनिया को सचखण्ड बना देते हैं। दूसरा कोई बना न सके। जो सच्च खण्ड था वही अभी झूठ खण्ड है। सच्च खण्ड के लिए हम पुरुषार्थ कर रहे हैं। सच्च खण्ड था अभी नहीं हैं। फिर पुरुषार्थ करते हैं। जो सच्च खण्ड था। तो बाकी इतने सब खण्ड थे नहीं। वहां यह सभा होते ही नहीं। यह सभी पीछे आये हैं। सच्च खण्ड का किसको पता नहीं है। बाकी जो अभी खण्ड है उन्हों का तो सभी को मालूम है। अपने2 धर्म के स्थापक को जानते हैं। बाकी सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी को और इस संगम युगी ब्राह्मण कुल को कोई भी नहीं जानते। प्रजापिता ब्रह्मा को भी कोई नहीं जानते। कहते हैं हम ब्राह्मण ब्रह्मा के औलाद हैं। परन्तु बाप समझाते हैं वह है कुख वंशावली। तुम हो मुख वंशावली। वह कुख वंशावली है अपवित्र। तुम मुख वंशावली हो पवित्र। तुम मुख वंशावली बन फिर तुम छी छी दुनिया रावण राज्य से चले जाते हो। वहां रावण राज्य होता ही नहीं। अभी तुम चलते हो नई दुनिया में। उनको कहते ही हैं वायसलेस वर्ल्ड। वर्ल्ड की नई और पुरानी होती है। कैसे होती है यह भी तुम जान गये हो। दूसरा को कोई के बुधि में नहीं। लाखों वर्ष की बात कोई के बुधि में याद भी न रहे। यह तो थोड़े ही समय की बात है। बाप बच्चों को समझाते हैं। वह भक्ति मार्ग के लम्बी चोड़ी झूठे गपोड़े हैं। बाप आकर कम्पलेन करते हैं। मैं आता ही तब हूं जब खास भारत में ग्लानी होती है। दूसरे जगह तो किसको भी पता नहीं हैं। निराकार बाप क्या चीज़ है। बड़ा2 लिंग बनाकर रख दिया है। बच्चों को समझाया है आत्मा कब छोटी बड़ी नहीं होती। आत्मा तो अविनाशी है। साईज़ छोटा बड़ा होता नहीं। जैसे आत्मा अविनाशी है वैसे बाप भी अविनाशी है। वह है परम सुप्रीम आत्मा। सुप्रीम अर्थात जो सदैव पवित्र और प्रि= निर्विकारी है। तुम आत्मायें भी निर्विकारी थे। निर्विकारी दुनिया थी। उनको कहा ही जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी दुनिया। फिर जरूर पुरानी होती है। कला कम होती जाती है। दो कला कम चन्द्रवंशी राज्य था। फिर दुनिया पुराना बनती जाती है। पीछे और और खण्ड आते जाते हैं। उनको कहा जाता है वायपलाट। उन्हों के साथ तुम्हारा को कनेक्शन नहीं। परन्तु मिक्सअप हो जाते हैं। ड्रामा पलेन अनुसार जो कुछ होता है वह फिर होगा। जैसे एक आया और कितने को बुध धर्म में ले गया। धर्म ही बदल दिया। हिन्दुओं ने अपना धर्म आपे ही बदला है। क्यों कि कर्म भ्रष्ट होने से धर्म भ्रष्ट भी हो जाते हैं। कर्म भ्रष्ट हो गये हैं ना। वाम मार्ग में चले गये। जगरनाथ के मंदिर में भल गये होंगे परन्तु कोई का खयाल नहीं आता। खुद विकारी है तो उन्हों को भी विकारी देखते हैं। यह नहीं समझते हैं कि देवतायें फिर वाम मार्ग में गये हैं। उन्हों के यह चित्र हैं। देवी देवता नाम तो बहुत अच्छा है। हिन्दु तो हिन्दुस्तान का नाम है। यह फिर अपने को हिन्दु कह देते हैं। कितनी भूल है। इसलिए बाप कहते हैं यदा यदा हि धर्मस्य··· बाप भारत में ही आते हैं। ऐसे तो नहीं कहते हैं कि मैं हिन्दुस्तान में आता हूं। यह है ही भारत। हिन्दुस्तान वा हिन्दुधर्म है नहीं। मुसलमानों ने हिन्दुस्तान नाम रखा है। यह भी ड्रामा की नूंध है। अच्छी रीत समझाना चाहिए। यह भी नालेज है ना। पुनर्जन्म लेते2 वाम मार्ग में आते2 भ्रष्टाचारी विकारी बन गये हैं। फिर उन्हों के आगे कहते हैं आप सम्पूर्ण निर्विकारी हो हम विकारी पापी हैं। और कोई खण्ड वाले ऐसे नहीं कहेंगे कि आप सम्पूर्ण निर्विकारी हम विकारी हैं। हमारे

में कोई गुण नहीं है। ऐसे कहते कबसुना न है। सिख लोग भल ग्रन्थ के आगे बैठते हैं परन्तु ऐसे नहीं कहेंगे नानक निर्विकारी है विकारी है। नानकपंथी कंगन लगाते हैं। वह है निर्विकारीपने की निशानी। परन्तु विकार बिगर रह नहीं सकते। झूठी निशानी दे रखी है। जैसे हिन्दुओं ने जनेव पहना है ना। वह भी वास्तव में पवित्रता की निशानी है। आगे जनेव बहुत पहनते थे। बहुत रसम-रिवाज़ है। आजकल तो कुछ भी है नहीं। धर्म वैगरह कुछ भी चलता थोड़े ही हैं। धर्म ही चट हो गया है। देवी देवता धर्म वाले ही हिन्दु बनगये हैं। एक हा भारत है जो सभी धर्मों को छुट्टी देते हैं। क्योंकि अपने धर्म को नहीं जानते हैं। वास्तव में हिन्दुधर्म तो है नहीं। क्या क्या हो रहा है। बाप बैठ समझाते हैं। यह है पुरानी दुनिया। मनुष्यों को तो कुछ भी पता नहीं। किसके ध्यान में भी नहीं आता। यह भक्ति मार्ग चल रहा है। उनको कहा जाता है भक्ति कल्ट। ज्ञान कल्ट सतयुग में हो जाता। सतयुग में सम्पूर्ण निर्विकारी होते हैं। यहां तो हो न सके। देवताओं को कहा जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी। कलियुग में तो सम्पूर्ण निर्विकारी हो न सके। सन्यासियों का धर्म ही अलग है। वह है ही निवृति मार्ग वाले। प्रवृति मार्ग की स्थापना तो बाप ही करते हैं। बाकी इन सभी के गुरु हैं निवृति मार्ग वाले। उन से उन्हों का जोर जास्ती हो गया है। सन्यासी हैं ना। संस्कृत भी पढ़ते हैं। वेद-उपनिषद आद भी पढ़ते हैं। बाप कहते हैं यह सभी हैं शास्त्रों की भूसा। जो कुछ तुमने पढ़ा है इन सभी से मैं थोड़े ही मिलता हूं। मैं तो जब आता हूं सभी को नज़र से निहाल कर देता हूं। गायन भी है ना नज़र से निहाल स्वामी कीदा सदगुरु। यहां तुम क्यों आये हो? निहाल बनने, विश्व का मालिक बनने। बापको याद करो तो निहाल बन जावेंगे। ऐसे कब कोई कहेंगे नहीं कि ऐसा करने से तुम यह बन जावेंगे। बाप ही कहते हैं तुमको यह बनना है। यह लक्ष्मी कैसे बने कोई को पता नहीं है। तुम बच्चों को तो सभी कुछ बतलाते हैं। यही 84 जन्मले पतित बने हैं। फिर तुमको यह बनाने आया हूं। बात तो बड़ी सीधी है। बाप अपना परिचय भी देते हैं। नज़र से निहाल ... यह किसके लिए कहेंगे वह गुरु लोग तो ढेर हो गये हैं। अबलाएं माताएं भोली है। तुम भी सभी भोलेनाथ के बच्चे हो। शंकर की तो बात ही नहीं। आंखे खाले और विनाश हो जाये। यह भोलापना है क्या। ऐसे भी नहीं। ऐसे नहीं कि बाप कहेंगे कि विनाश करो। यह भी पाप हो जाये। बाप कब ऐसा काम कर न सके। विनाश तो कोई चीज़ से होगा ना। बाप ऐसे डायरेक्शन नहीं देते। यह तो सभी सायंस निकालते रहते हैं। यह भी आसुरी बिचार है उन्हों की। जानते हैं हम अपने कुल का आपे ही विनाश करते हैं। बांधे हुये हैं। छोड़ नहीं सकते। उन्हों की भी बड़ी आजीविका है। नाम कितना होता है एरोप्लेन में मून आद में जाते हैं। फायदा तो कुछ भी नहीं। अभी तुम बच्चे जानते हो, देखते हो,। बाप भी तुम्हारी आत्मा को देखते हैं। यह शरीर तो विनाशी हैं। आत्मा ही अविनाशी है। इस हालत में तो आत्म-अभिमानी बनना चाहिए।

मीठे2 बच्चों तुम भी बाप से नज़र लगाओ। हे आत्मा अपने बाप को याद करो तो निहाल हो जावेंगे। बाप कहते हैं जो मुझे याद करते हैं मैं भी उनको याद करता हूं। जानता हूं यह मेरे बच्चे हैं। जो मुझे याद करते हैं मैं भी उनको याद करता हूं। जो मेरे लिए सर्विस करते हैं मैं भी उनको जरूर तो याद करता हूं। तो उनको बल मिले। यहां सभी बैठे हैं। जो निहाल हो जावेंगे वह ही यह बनेंगे। कोई राजा कोई प्रजा बनेंगे। बाप तो सभी के चलन को जानते हैं। बाप को ही नहीं याद करते है तो फिर बाबा उनको कैसे या करेंगे। गायन है ना याद करो तो मैं भी याद करूंगा। औरसंग तोड़ एक संग जोड़ूंगा। एक तो है निराकार। आत्मा भी निराकार है। निराकार बाप कहते हैं एक को याद करो। तुम खुद ही कहते हो हे पतित-पावन ... यह किसको कहा? क्या ब्रहमा को, विष्णु को, शंकर को? नहीं। पतित-पावन तो एक ही है। वह कब भी पुनर्जन्म में नहीं आते हैं। वह तो पावन ही है। उनको कहा जाता है सुप्रीम शक्तिवान्। फिर अथाटी। इसका भी अर्थ कोई नहीं समझते। बाप ही सृष्टि के आदि मध्य अन्त को जानते हैं। और जो भी ...

शास्त्र आद सभी को जानते हैं। वह सन्यासी लोग फिर अपने को अर्थार्टी समझते हैं। इसलिए उन्हों को टाईटल्स भी मिली है। बाप को तो पहले से ही टाईटल मिला हुआ है। वह कोई पढ़ कर थोड़े ही लेते हैं। तुमको समझाते हैं। यहकोई वेद शास्त्र आद पढ़े हैं क्या। भक्ति मार्ग की कितनी सामग्री है। ढेर के ढेर शास्त्र हैं। बाप फर्क बैठ बताते हैं। कितना तीर्थों आद पर मेलों आद पर जाते हैं। मनुष्य कितना दुःखी होते हैं। तंग होते हैं। बाबा कोई तकलीफ बच्चों को नहींदेते हैं। सिर्फ कहते हैं बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हो। तो तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। सतोप्रधान नई सृष्टि थी। फिर उनको तमोप्रधान बनना ही है। कोई भी चीज़ सदैव के लिए नई नहीं रहती है। हर चीज़ सतोपेधान, सतो रजो तमो होती ही हैं। तो बाप बच्चों को बैठ समझाते हैं। और फिर कहते हैं औरों को भी समझाओ। एक बाप को याद करो। और संग तोड़ एक को याद करो। कितने मित्र-सम्बन्धी आद हैं। कोई को भी याद न करो। शरीर को भी नहीं। तुम रूहानी बच्चे हो तो एकरूहानी बाप को ही याद करो। यही मेहनत है। फिर कोई नाम रूप याद न आवेगा। कहो फंसेंगे नहीं। बाप एक ही बार आकर समझाते हैं। यह सभी का अन्तिम जन्म है। इस मृत्युलोक में यह अन्तिम जन्म है। पुरानी दुनिया सेा फिर नई बनेगी। नई सृष्टि में यह देवतायें होते हैं। डिटीज़्म है ना। यह भी कब था यह नहीं जानते। किसने स्थापन किया कुछ भी याद न है। सभी भूल गये हैं। बाप कहते हैंतुम सभी स्वदर्स होना। स्वर्टस को तो ड्रामा का पता होना चाहिए। बेहद का बाप आकर तुम बच्चों को समझाते हैं। अभीधारणा करो। फिर हरेक अपने से पूछे हमको कहांतक धारणा है। धारण कर फिर औरों को धारण करानाहैं। अपने अन्दर से पूछना है मैं बाबा को सारे दिन में कितना याद करता हूं। बाबा जिस से हमको विश्व की बाद शाहीमिलती है उनको तो स्वाशों स्वाशयाद करना चाहिए। अगर उनको याद न करेंगे तो बाप से वर्सा कैसे ले सकेंगे। रोज रात्रि को अपना पोतामेल लो। तुम व्यापारी हो ना। बहुत व्यापारी लोगरोज रात को सारा पोतामेल निकालते हैं। कितना खर्चा हुआ कितना फायदा हुआ। बाप राय तो बहुत अच्छी देते हैं। दिल से पूछो हम कितना याद करते हैं। जो बाप हमको विश्व का मालिकबनाते हैं उस बाप ने कहा है मुझे याद करो। उनका कहनान मानते तो गोया नापरमानबरदार ठहरे। आज्ञा का उलंघन करेंगे तो नतीजा क्या होगा। नापास हो पड़ेंगे। अभी नहीं समझते हो आगे चल करना पड़ेगा। नहीं तो अपनी अवस्था कोई कैसे समझ सकेंगे। यह तो अच्छा ही है। पाप किया हुआ होगा तो अटेन्शन परहेगा। बाप कहते हैं किस को दुःख देते हो तो सोणा डन्ड पड़ जावेगा। क्योंकि मेरी ग्लानी करते हो ना। तो सोणा डन्ड हो जावेगा। सुनावेंगे तो बच जावेंगे। नहीं तो वृधि को पता रहेगा। सभी बातें बाप भिन्न रीति से समझाते रहते हैं। मोस्ट बिलवेड बाप है। उनको याद करने से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। बाप को याद करना तो अच्छा ही है। चार्टरखो। आज के दिन में किसको दुःख तो नहीं दिया। मनसा वाचा कर्मणा। कोई भी विकार तब आता है जब देह-अभिमान में आते हैं। देही अभिमानी होकर रहो तो कब भी आवेंगे नहीं। यह सभी बातें समझने की है। रोज 2 बाप समझाते हैं। नम्बरवार पुरुषार्थ करते रहते हैं। कल्प पहले मिशल। यह तो कुछ भी नहीं जानता था। यहीफिर सभी से पावन फिर सभी से पतित बनते हैं। बाप कहते हैं इनके बहुत जन्मों के अन्त में वानप्रस्त अवस्था में आकर मैं प्रवेश करता हूं। वाणी से परे जाने लिए गुरु करते हैं। परन्तु वह सच्चा गुरु तो है नहीं। तुम वाणी से परे जाने के लिए सच्च2पुरुषार्थ कर रहे हैं। सभी को जाना है फिर नम्बरवार आवेंगे। हर एक पुरुषार्थ करते हैं। हम पढ़ कर अच्छा पद पावें। बाप कहते हैं सारी दुनिया वान-प्रस्ती है। पुरुषार्थ करे न करे,। तुम हो सच्चे2 वानप्रस्ती। सारी दुनिया, सभी कुछ बदल जावेगा। अच्छा मीठे मीठे सिकीलधे बच्चों प्रित रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। मीठे 2 रूहानी बच्चों प्रित रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।